IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

ओमप्रकाश वाल्मिकि की चुनी हुई कविताओं में दलित विमर्श

प्रा. इंगवले आशा शामराव
हिंदी वरिष्ठ विभाग
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली.

Abstract: *दलित साहित्य-आंदोलन के महामेरू आधार-स्तंभ, दलित साहित्य आंदोलन को नया मोड देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले एक संवेदनशील, महत्वकांक्षी, दलित विमर्श को वाणी देनेवाले, और दलित विमर्श साहित्य में अपना स्थान अक्षूण्ण रखनेवाले, दलित विमर्श के प्रतिभासंपन्न रचनाकार के रूप में ओमप्रकाश वाल्मिकि जी का नाम आता है। जिन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर समाज में फैले जातिगत भेदभाव, शोषण और अन्याय को उजागर किया है। उनके साहित्य का एक अंतिम स्वर है समाज में साहित्य के माध्यम व्दारा क्रांति करना और उसके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन विगत तीन-चार दशकों से उन्होंने दलित साहित्य को संपन्न ही नहीं किया बल्कि समानता, सम्मान और सामाजिक न्याय की मांग की है। उनका साहित्य समाज को जागृत करने और सामाजिक परिवर्तन लाने का माध्यम है। इसीलिए तो उनका साहित्य दलित चेतना की अभिव्यक्ति करनेवाला सशक्त माध्यम है। उनके साहित्य में दलित विमर्श, सामाजिक अन्याय के विरूद्ध संघर्ष और समानता की स्थापना का प्रमुख स्वर दिखाई देता है। उन्होंने दलित जीवन के विभिन्न आयामों को छुने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। दलित वेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। ओमप्रकाश वाल्मिकि जी अपने विचारोव्दारा सामाजिक बदलाव का महास्वप्न लेकर साहित्य लिका है जो सचमुच गैरदलित लोगों को पथप्रदर्शन करती है। वाल्मिकि जी के 'बस्स ! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह से कुछ चुनी हुयी कविताओं में चित्रित दलित विमर्श को देखेंगे।*

बीज शब्द – दलित, अन्याय, अत्याचार, विद्रोह

I. प्रस्तावना

दलित साहित्य-आंदोलन के महामेरू आधार-स्तंभ, दलित साहित्य आंदोलन को नया मोड देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले एक संवेदनशील, महत्वकांक्षी, दलित विमर्श को वाणी देनेवाले, और दलित विमर्श साहित्य में अपना स्थान अक्षूण्ण रखनेवाले, दलित विमर्श के प्रतिभासंपन्न रचनाकार के रूप में ओमप्रकाश वाल्मिकि जी का नाम आता है। जिन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर समाज में फैले जातिगत भेदभाव, शोषण और अन्याय को उजागर किया है। उनके साहित्य का एक अंतिम स्वर है समाज में साहित्य के माध्यम व्दारा क्रांति करना और उसके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन विगत तीन-चार दशकों से उन्होंने दलित साहित्य को संपन्न ही नहीं किया बल्कि समानता, सम्मान और सामाजिक न्याय की मांग की है। उनका साहित्य समाज को जागृत करने और सामाजिक परिवर्तन लाने का माध्यम है। इसीलिए तो उनका साहित्य दलित चेतना की अभिव्यक्ति करनेवाला सशक्त माध्यम है। उनके साहित्य में दलित विमर्श, सामाजिक अन्याय के विरूद्ध संघर्ष और समानता की स्थापना का प्रमुख स्वर दिखाई देता है। उन्होंने दलित जीवन के विभिन्न आयामों को छुने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। दलित वेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। ओमप्रकाश वाल्मिकि जी अपने विचारोव्दारा सामाजिक बदलाव का महास्वप्न लेकर साहित्य लिका है जो सचमुच गैरदलित लोगों को पथप्रदर्शन करती है। वाल्मिकि जी के 'बस्स ! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह से कुछ चुनी हुयी कविताओं में चित्रित दलित विमर्श को देखेंगे।

ओमप्रकाश वाल्मिकि हिंदी दलित साहित्य की एक महान विभूती है। उनकी रचनाएँ हिंदी दलित साहित्य में अक्षुण्ण स्थान रखती है। खुद दलित होने के नाते जीवन में भोगा, अनुभूत किया उसीका वास्तव चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में चित्रित किया है। उन्होंने

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

जीवन में भोगा हुआ दुःख, दर्द, पीडा, व्यथा, प्रताडना को साहित्य में अभिव्यक्त किया है। हिंदी दलित साहित्य सामाजिक विषमता पर प्रकाश डालने के काम सर्वप्रथम वाल्मिकि जी ने किया है। भारतीय समाज में दिखाई देनेवाली छुआछूत, जातिभेद, असमानता, दलितों पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार को कविता के माध्यमव्दारा वाणी देने का काम वाल्मिकि जी ने किया है। जाति और वर्णव्यवस्था मनुष्य को मनुष्यत्व से वंचित करती है। वाल्मिकि जी की कविताओं में दलित जीवन संघर्ष, उत्पीडन, दर्द, वेदना, पीडा, का ज्वलंत चित्रण दिखाई देता है। 'बस्स ! बहुत हो चुका' वाल्मिकि जी का दुसरा कविता संग्रह है। जिसका प्राकशन सन 1997 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली व्दारा हुआ है। प्रस्तुत कवितासंग्रह की कविताओं में वर्णव्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना उजागर होती है तो दूसरी ओर दलित वर्ग की महता स्थापित करने की महत्वकांक्षा भी दिखाई देती है। इसलिए हम कह सकते है कि वाल्मिकिजी की दलित कविताओं का प्रमुख स्वर सामाजिक, विषमता, संघर्ष रहा है। उनकी कविताओं में यथार्थ गहरे भावबोध के सामाजिक अन्याय, अत्याचार, शोषण, दमन का चित्रण दिखाई देता है। उनकी समस्त कविताओं में दलितों की आक्रोशजनित गंभीर अभिव्यक्ति मुखरित होती है। उनकी प्रत्येक कविता दलित, शोषित, पीडित व्यक्ति को सामाजिक स्तर पर न्याय देना चाहती है। उपेक्षित, दलित वर्ग की पीडा, वेदना, दर्द को वाल्मिकि जी ने काव्य रूप दिया है।

'शायद आप जानते है' प्रस्तुत कविता में जातिगत भेदभाव का चित्रण है यहाँ वाल्मिकि जी दलित, शोषित, पीडितों के प्रति आक्रोश दिखाई देता है। यहाँ वाल्मिकि जी ने समाज के उच्च वर्ग के अहम, गर्व को स्पष्ट किया है। भारतीय संस्कृति महान है। प्राचीन है। आदर्शवादी है। इस संस्कृति के समर्थकों का मत है कि उनके धर्म में मानवतावादी विचारधारा है। परंतु ओमप्रकाश वाल्मिकि उनके इस पाखंडी विचारधारापर करारा व्यंग्य करते है उनकी अंधी स्वार्थांधता को फटकारते हुये कहते है –

"यज्ञों में पशुओं कि बलि चढाना
किस संस्कृति के प्रतीक है
मैं नहीं जानता
शायद आप जानते हो।" 1

इस तरह वाल्मिकि डटकर उच्च वर्ग को पुछते है यज्ञों में पशुओं कि बली चढाना किस संस्कृति का प्रतीक है। वे पशु बली प्रथा को अस्वीकार करते हुये समाज में अहिंसा का बीज बोते है।

'मुठ्ठी भर चावल' कविता में परंपरागत दलित जीवन को अंकित करते हुए पुरखों का उदाहरण देते है। सदियों से प्रताडित दलित समाज शोषित, अन्याग्रस्त, अपमानित जीवन जी रहा है। सालों साल चले आ गये पुरखों की स्मृतियों को याद करते, उनके कष्टप्रद, यातनाओं से भरे दिन याद आते है। उच्च वर्ग व्दारा किये अमानुष घटनाएँ यातनाएँ पुरखों को याद करते उनमें चेतना जागृत करते हुए सोचते है –

"ओ मेरे अज्ञान, अनाम पुरखों
तुम्हारे मुक शब्द
जल रहे है
दहकी राख की तरह
राख जो लगातार काँप रही है
रोष में भरी हुई" 2

'बाहर जाएंगे एक दिन' – मनुष्य जीवन आशाओं पर जीता है। प्रस्तुत कविता में वाल्मिकि जी यही आस मन में रखते है। दलित समाज का आज जो व्यथित करनेवाला समाज जीवन है वह भविष्य में निश्चित रूप में बदलेगा। वर्तमान में दलितों की समस्या पर उनके दयनिय जीवन पर प्रकाश डालते हुए वे सोचते है कि आज दलितों को बच्चों को कभी न दुध, न दही, न मख्खन मिला। सोने के लिए कभी गद्देदार बिस्तर मिला। वे हमेशा परंपरा से लढते रहे। शोषित दलितों ने अपने बच्चोंको भूखा-प्यासा रखकर उनकी परवरिश की है। बच्चों के मन आशाओं निर्माण किया है। अपने बच्चों को भविष्य के बारे में संकेत करते हुए कहते है एक दिन तुम्हारे ये दुःखभरे जीवन, यातना और संघर्ष से भरा जीवन समाप्त हो जाएगा। उन्हें भरोसा है कि एक न एक दिन शोषकों के जीवन में परिवर्तन जरूर आएगा। कवि को विश्वास है कि मनुष्य जीवन आशा पर जी रहा है। आज नहीं तो कल दलितों को मानव समझा जायेगा। दलितों के यह भूखे, प्यासे, प्रताडित बच्चे एक न एक दिन तुम्हारे स्वार्थी चंगुल को, षडयत्र को समझ जायेंगे। ये बच्चे

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

परंपरागत चली आ रही पुरखों की तरह सवर्णों की गुलामी नहीं करेंगे। वे आत्मनिर्भर होंगे। और अपने अधिकार और सम्मान के हकदर होंगे। यह आशावाद ओमप्रकाश वाल्मिकि यहाँ रखते है।

घृणा तुम्हें मार सकता है – सदियों से दलित अन्याय, अत्याचार, विषमता, घोर अपमान, यातनाओं को सह रहा है। सवर्ण समाज दलितों पर यह अमानुष कृत्य कर रहा है। इसलिए वाल्मिकि जी सवर्ण समाज को चेतावनी देते है कि दलितों के स्थानपर खुद को रखकर देखो। दलितों का दुःख, दर्द को एक दिन के लिए सहो या उनकी यातनाओं को महसूस करो तब तूम्हें दलित भुगत यातनाओं का, वेदनाओं का पता चलेगा।

"रोटी की महक,
जानती है आग का स्वाद
और
पहुँचती है नासिका रंध्र तक
हड्डियों केरस में डूब कर" 3

इसतरह कवि वाल्मिकि दलित समाज को जागरूक एवं सतर्क रहने के लिए कहते हुए संदेश देते है कि अपने जीवन को सुंदर बनाने के लिए तुम्हें कायरता को छोडकर डटकर सामना करना होगा।

पंडित का चेहरा-प्रस्तुत कविता में वाल्मिकिजी ने मनुष्य जीवन याने दलितों में शिक्षा का होना महत्वपूर्ण बताया है। वर्णव्यवस्था के कारण तथा परंपरागत रूढियों के कारण शोषित दलित समाज का यथार्थता से चित्रण किया है। वास्तव में दलित समाज में शिक्षा का अभाव, अज्ञान, होने के कारण पाखंडी लोगों का शिकार होते हैं। वाल्मिकि गाँव के पण्डित को दुतकारते हुये कहते है गाँव का पंडित पुरानी पोथियों के शब्द देखकर भविष्य बता देता था, अज्ञानी लोगों को अपनी चंगुल में फसाँता है। दक्षिणा देखकर पण्डित शब्दों के अर्थों को बदल देता है। इसतरह वाल्मिकि जी ने प्रस्तुत कविता में अशिक्षित, अज्ञानी दलित समज के शोषण का वास्तव चित्रण किया है। उनका स्पष्ट मानना है कि शिक्षा के सिवा दलितों का विकास संभव नहीं है। वाल्मिकिजी दलित समाज को शिक्षा का संदेश देते है।

घृणा और प्रेम कहाँ से शुरू होते है – प्रस्तुत कविता दलित समाज के प्रति उच्च वर्ग मानसिकता को चित्रित किया है। दलितों के शोषण, अत्याचार, अन्याय का चित्रण किया है। प्राचीन काल से सवर्ण समाज ने प्रेम के बदले घृणा और तिरस्कार ही दिया है। सवर्ण समाज ने दलित मजदूर वर्ग का शोषण किया है। दलित समाज अंधविश्वास एवं अज्ञान से ग्रसित होने के कारण सवर्णो ने दलितों को सत्य से दूर रखा। धर्म के नामपर उनपर अमानवीय जुल्म करते थे। अस्पृश्यता बरकरार रखने का प्रयत्न करते थे।

प्रस्तुत कविता में कवि का मत है कि दलित समाज शिक्षित होकर सरकारी नोकरी में अधिकारी पद ग्रहण करें तो भी सवर्ण चपरासी अपनी जातिगत उच्चता, गर्व, अभिमान के कारण उन्हें मान-सम्मान नहीं देता। जातियता की जड समाज में गहरी हो गई है।

दलित वर्ग में दिखाई देनेवाला अज्ञान, अंधविश्वास, रूढी परंपराओं का पालन, नारी की हिन-दीन अवस्था आदि का चित्रण ओमप्रकाश वाल्मिकि जी ने प्रस्तुत कविता में वास्तविकता की धरातल पर किया है। समाज में दलित वर्ग आज भी दरिद्रता से जी रहे है। दिनभर जी तोडकर मेहनत करके भूखे रहते है। इन्हे पेट भर खाना भी नशीब नहीं होता। दर दर की ठोकरे खाकर वे अपना अन्याय, अत्याचार का शिकार बन चुके है।

'कभी सोचा था' प्रस्तुत कविता में वाल्मिकि जी ने समाज में व्याप्त वर्णव्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। समाज में सवर्ण अपनी स्वार्थांधता को बनाए के लिए वर्णव्यवस्था पर अधिक ध्यान देते है। वे वर्णव्यवस्था को आदर्शवत मानते है भले ही मार्क्सवादी विचार को ने मार्क्सवाद का विरोध किया हो। कविने उच्च वर्ग के सहिष्णुता विचारों पर प्रहार करते हुए एक उदाहरण दिया है कि समाज में जब दंगे फसाद में दलित व्यक्ति मारे जाते है तो उन्हें दुःख नहीं होता क्योंकि उच्चवर्ग के मन में निम्नवर्ग के प्रति मानवताही दिखाई नहीं देती।

"कभी सोचा है
गंधे नाले के किनारे बसे
वर्णव्यवस्था के मारे लोग
इसतरह क्यों जीते है

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

तुम पराये क्यों लगते हो उन्हें
कभी सोचा है।" 4

इसतरह भारतीय समाज में आज भी वर्णव्यवस्था स्थायी रूप में दिखाई देती है। दिन ब दिन गरीब गरीब होता जा रहा है अमीर अधिक अमीर होता जा रहा है। इसलिए कवि वाल्मिकि जी समाज में समताधिष्ठत समाज का निर्माण करना चाहते है।

II. निष्कर्ष

ओमप्रकाश वाल्मिकि जी ने दलितों पर सदियों से चले आ रहे अन्याय, अत्याचार, अपमान, विषमता पर करारा प्रहार किया है। दलितों पर हुए शोषण को मार्मिकता का वास्तव चित्रण किया है। कवि दलितों के प्रति अन्याय, अत्याचार, दुःख-दर्द, वेदनाओं के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति व्यक्त करता है।

प्राचीन काल से लेकर आजतक समाज में दलित जीवन बहुत ही दयनीय है। दलित जीवन में अनेक समस्या है। समाज में ज्यो चार वर्ण हैं जिसके निचले स्तर पर दलित है इसलिए दलित वर्ग का जीवन हिन-दीन दिखाई देता है। दलितों को समाज में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजकिय अधिकारों से वंचित रखा गया। जिसकारण समाज में जातियता का निर्माण हुआ। ओमप्रकाश वाल्मिकि ने बस्स बहुत ! बहुत हो चुका काव्यसंग्रह में दलित जीवन की ज्वलंत समस्याओं का यथार्थता से चित्रण किया है।

संदर्भ

1. ओ. वा. 'बस्स ! बहुत हो चुका'
2. ओ. वा. वहीं
3. ओ. वा. वहीं
4. ओ. वा. वहीं

संदर्भ ग्रंथ सूची

5. डॉ. कुमार प्रकाश, साठोत्तरी हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श का स्वरूप, प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
6. थोरात विमल, दलित साहित्य का स्त्रीवादी स्वर, अनामिका पब्लिशर्स अन्ड डिस्ट्रीब्युटरर्स नई दिल्ली, 2008